'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 274: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

स्वतंत्रता आन्दोलन में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य का योगदान

प्रा.रवींद्र पुंजाराम ठाकरे
अध्यक्ष,स्नातकोत्तर हिंदी विभाग ,
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला ,विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,नामपुर ,
तह-बागलाण ,जि-नाशिक (महा.)
दूरभाष -9822916518
इमेल – ravipthakare@gmail.com

प्रोफ.डॉ.अनिता पोपटराव नेरे ,
शोधनिर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
महिलारत्न पुष्पाताई हिरे कला ,विज्ञान एवं वाणिज्य महिला
महाविद्यालय मालेगांव कैम्प ,तह –मालेगाँव

भूमिका:-

हिंदी साहित्य भारतीय आजादी की चेतना का इस्पाती दस्तावेज रहा है।इस युग के कवियों ने भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की लौ जगाने का महनीय कार्य किया है। आधुनिक हिंदी कविता के इतिहास में 'द्विवेदी युग' (सन १९०० से १९२०) इस महत्वपूर्ण है।हिंदी साहित्य के कुछ इतिहासकार इस काल को 'सुधार काल' भी कहते हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक बनते ही इस युग में नवीन काव्यधारा का उद्रेक हुआ। हिंदी कविता में इसी युग में आधुनिकता की प्रतिष्ठा हुई। द्विवेदी युग ने आधुनिकता को हिंदी साहित्य में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस युग के साहित्य में नई जीवन दृष्टि और भारतीयता के संस्कार हैं। वह हिंद की मिट्टी की गंध, देश की अर्जित निजी सांस्कृतिक सभ्यता, मानवीय आस्था और जीवन मूल्यों से मंडित है। खड़ी बोली की प्रतिष्ठा, काव्य भाषा के रूप, राष्ट्रीय मूल्यों का साहित्य में समावेश, काव्यगत उपादानों का नए परिप्रेक्ष्य में आनयन तथा व्याकरणिक दृष्टिकोण से भाषागत शुद्धता की प्रवृत्ति का उन्मेष इसी युग में हुआ। इस युग में काव्य रचना के लिए ब्रजभाषा का त्याग कर खड़ी बोली की प्रतिष्ठा की गई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी खड़ी बोली के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अनेक कवियों और लेखकों को साहित्य रचना के लिए प्रोत्साहित किया था। उनसे प्रेरणा लेकर ही इस युग के मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, श्रीधर पाठक, हरिऔध आदि अनेक प्रसिद्ध कवियों और लेखकों ने उनके द्वारा निर्धारित साहित्यादर्शों का अनुसरण किया। ।

श्री मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के यशस्वी लोकप्रिय, शीर्षस्थ कृती कवि हैं। उनके काव्य का साहित्यिक ही नहीं ऐतिहासिक महत्व भी है। बीसवीं शताब्दी में हिंदी काव्य के क्षेत्र में जिन कवियों ने अपनी विशिष्ट देन प्रस्तुत की है, उनमें मैथिलीशरण गुप्त का स्थान शीर्षस्थ है। गुप्तजी का रचना काल द्विवेदी युग से लेकर नई कविता के युग तक प्रशस्त है। अर्थात् द्विवेदी युग के पश्चात् भी गुप्तजी निरंतर रचनारत थे। इस दीर्घ कालावधि के मध्य हिंदी कविता के क्षेत्र में अनेक काव्यांदलनों का उद्भव एवं विकास हुआ। छायावाद,

Scanned with CamScanner

E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता के दौर तक वे समानांतर एक शांत, धैर्यवान और निष्ठावान तपस्वी की भाँति साहित्य की सेवा में रत रहे। उन्होंने जहाँ एक ओर समकालीन विचारधाराओं से प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया, वहाँ दूसरी ओर सभ्यता, संस्कृति, समाज, धर्म और राष्ट्र विषयक परंपरागत आदर्शों का भी अनुगमन किया। गुप्तजी के काव्य का साहित्यिक ही नहीं, ऐतिहासिक महत्व भी है। वे खड़ी बोली के प्रवर्तक और उन्नायक हैं। कवि गुप्त मूलतः उस भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता हैं, जिसे मानवतावादी संस्कृति कहा जाता है और जिसका मूलाधार मनुष्य है। गुप्तजी जन-समाज के प्रतिनिधि रचयिता हैं तथा भारतीय नवोत्थान के पुरस्कर्ताoo भी हैं। धार्मिक दृष्टि से राम में इनकी अनन्य भक्ति है। किंतु सांप्रदायिकता से वे मुक्त हैं। राजनीतिक क्षेत्र में उन्हें राजतंत्र के प्रति अनुराग है। अर्थात् रामराज्य तथा लोकतंत्र उनका राज्यादर्श है। समाज की व्यवस्था का मेरुदंड वे मर्यादा को मानते थे। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत उदार और आदरपूर्ण रहा है। उनका जीवन दर्शन प्रगतिशील होने के साथ-साथ सर्वथा भारतीय है। भारत की परंपराएँ और परंपरागत विश्वास उनके काव्य में सर्वत्र प्रोद्भासित हैं। मानवतावादी, नैतिक, सांस्कृतिक काव्यधारा के वे विशिष्ट कवि हैं। गाँधीवाद में उनकी जबरदस्त निष्ठा है। भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता के साथ गुप्तजी प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि भी हैं। इनकी प्रायः सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हैं) द्विवेदी युग में गुप्तजी का महत्व उसी रूप में बढ़ा था, जिस रूप में भक्तिकाल का महत्व तुलसीदास को लेकर। लेकिन समय के साथ उनका और उनके काव्य का महत्व कम नहीं हुआ है। उनके काव्य में भारत माता की आज़ादी की पुकार सर्वत्र विद्यमान है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य का योगदान:-

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना का स्वर सर्वाधिक सबल है। उनकी राष्ट्रीय भावना प्राचीन महापुरुषों के प्रति गौरव की भावना, देश के प्रति प्रेम, समाज सुधार की भावना, विदेशी शासन का विरोध, देशभाषा एवं साहित्य के उत्थान के प्रयत्न आदि अनेक रूपों में व्यक्त हुई है। डॉ. कमलाकांत पाठक का कवि की राष्ट्रभक्ति की लेकर कथन द्रष्टव्य है- "गुप्तजी ने स्पष्टतः राष्ट्रभावना से प्रेरित होकर और युग जीवन को परिष्कृत कर ऊँचा उठाने के उद्देश्य से काव्य-रचना की। साठ से अधिक काव्य ग्रंथों और काव्यनुवादों की उन्होंने रचना की, जिनका चित्र फलक विशाल है। देश-विदेश, इतिहास पुराण, रामायण-महाभारत, धर्म और लोकतत्व तथा प्राचीन और नवीन युग से उन्होंने काव्यवस्तु का आकलन किया। वस्तु विधान का ऐसा विराट आयोजन और सांस्कृतिक समन्वय का युगानुरूप ऐसा महत्तर प्रयास गोस्वामी तुलसीदास के पश्चात हिंदी में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में ही मिल पाया। वे हिंदी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा के शीर्षस्थ रचनाकार ही नहीं है, वरन् बीसवीं शती की विकासोन्मुख भारतीयता की अस्मिता के प्रतिनिधि कवि भी हैं। वे सही अर्थ में अपने युग-जीवन की आशा-आकांक्षाओं को उजागर करनेवाले राष्ट्रकवि हैं और यही उनकी श्रेष्ठता है। गुप्तजी की कविता राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता है। उनकी राष्ट्रीयता सांप्रदायिकता और जातीयता से ऊपर अति उदार और व्यापक है। मातृभूमि के लिए सर्वस्व बलिदान, स्वार्थ, त्याग तथा पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने की अमोघ प्रेरणा से गुप्तजी ने असंकीर्ण राष्ट्रीय भावना को विकसित किया तथा तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन को बल प्रदान किया। उन्होंने जातीय जीवन की बड़ी मार्मिक और रचनात्मक आलोचना की। उसके शुभ पक्ष को प्रोत्साहित और अशुभ पक्ष को तिरस्कृत किया । जहाँ उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडंबरों एवं निरर्थक रुढ़ियों पर जोरदार

Scanned with CamScanner

E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

प्रहार किए वहीं अपनी परंपरा के उपयोगी तत्वों का प्रबल समर्थन किया। गुप्तजी की कविता का सांस्कृतिक पक्ष अत्यंत प्रबल है, उसी में उनकी शक्ति निहित है। "1

आधुनिक काल में राष्ट्रीय काव्यधारा का उन्मेष द्विवेदी युग में प्रबल हुआ। द्विवेदी युग जातीय जनजागरण और राष्ट्रीय उन्मेष का युग था। इसी युग में राष्ट्रीय भावों से भरी हुई कविताएँ अर्वाधिक मात्रा में लिखी गई मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि रहे हैं। अतः उन्होंने अपने काव्यों में राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया और अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावों का सर्वाधिक प्रचार एवं प्रसार किया। गुप्तजी ने सन १९१२ ई. से लेकर मृत्युपर्यंत राष्ट्रीय भावों की गंगा को जन-जन के जीवन में बढ़ाने का भगीरथ प्रयास किया है। गुप्त ने सर्व प्रथम सन १९१२ ई. में 'भारत-भारती' लिखकर देशवासियों का ध्यान उनकी वर्तमान दुर्दशा की ओर आकृष्ट किया और अतीत की गौरवमयी झाँकी प्रस्तुत करके उन्हें पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त होने के लिए प्रोत्साहित किया था। इस काव्य में भारतवर्ष के महत्व का प्रतिपादन करते हुए कवि इसे भूलोक का गौरव प्रकृति का पुण्य-लीला स्थल कहा है-

"भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन ? भारत वर्ष है।"2

'भारत-भारती' के पश्चात गुप्तजी के काव्यों में 'वैतालिक' और 'स्वदेश संगीत' राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण रचनाएँ उल्लेखनीय है। 'वैतालिक' के जागरण के गीतों द्वारा उन्होंने भारतवासियों को प्रगति की ओर उन्मुख किया तथा भारतीय संस्कृति का पाश्चात्य संस्कृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का संदेश दिया। 'स्वदेश संगीत' गुप्तजी की राष्ट्र प्रेमपरक कविताओं का संग्रह है। इसके द्वारा परतंत्रता की घोर निद्रा में प्रसुप्त भारतवासियों को नवजागरण का संदेश दिया है। तदनंतर 'किसान' नामक काव्य में उन्होंने किसानों की दयनीय दशा पर क्षोभ प्रकट किया और उनके दुःख एवं दारिद्रय को उत्पन्न करने वाली शोषण-पद्धति को तत्काल समाप्त करने की प्रेरणा प्रदान की। इसके उपरांत 'अनघ' काव्य द्वारा कवि ने सत्याग्रह को प्रोत्साहन देते हुए राष्ट्र सेवा के साथ-साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आत्मोत्सर्ग करने की भावना का प्रचार किया। इसके पश्चात 'हिंदू' काव्य की रचना करके राष्ट्रव्यापी सामाजिक जड़ता, वैयक्तिक निश्चेष्टता, धार्मिक असहिष्णुता, जातिगत अनुदारता आदि की केंचुली को उतार फेंकने की प्रेरणा प्रदान की है-

"हिंदू मुसलमान क्रिस्तान परम पिता की सब संतान।
सभी बंधु हैं लघु या जेष्ठ, मत से मनुष्यत्व है श्रेष्ठ ।।" 3

गुप्तजी का साध्य था जन-जन में राष्ट्र चेतना जागृत करना और इसी के अनुकूल उन्होंने विभिन्न पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथा सूत्रों का संचयन करके अपने साध्य को प्राप्त किया है। उनके 'शक्ति', 'पंचवटी' और 'साकेत' काव्यों का मूल स्रोत रामायण रहा है तो 'जयद्रथ वध', 'सैरंध्री', 'वन-वैभव', 'बक-संहार', 'नहुष', 'जयभारत', 'हिडिंबा', 'द्वापर' तथा 'युद्ध' आदि काव्यों का प्रणयण महाभारत की कथाओं पर आधारित है। इन काव्य-कृतियों के माध्यम से गुप्तजी ने हमारे जातीय गौरव की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की तथा युवा पीढ़ी को

Scanned with CamScanner

साहस, शक्ति एवं उच्च चारित्रिकता की प्रेरणा दी है। 'साकेत' में वे सीता के व्याज से भारतमाता को स्वतंत्र करने का उद्बोधन देते हैं और जन-जन के मन में राष्ट्र भक्ति की भावना भरते हैं-

"भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बंधन में,
सिंधु पार वह बिलख रही है व्याकुल मन में।"4

'साकेत' के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जहाँ भी कवि को अवसर मिला है, उन्होंने राष्ट्रीय भावना का प्रकाशन किया है। अष्टम सर्ग में राम कहते हैं-

"भव में नववैभव भरने आया। नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया। इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।।" 5

राष्ट्रीयता की अवधारणा में सांप्रदायिक सौहार्द महत्वपूर्ण आयाम है। गुप्तजी ने राष्ट्रीयता की जो कल्पना की है उसमें केवल किसी एक जाति विशेष का स्थान न होकर भारत में निवास करनेवाली सभी जातियों, सभी धर्म, वर्ग के व्यक्तियों और सभी संप्रदायों का समानाधिकार है। सांप्रदायिक सद्भाव और सौहार्द के संबंध में उन्होंने अनेक स्थानों पर संतुलित विचार व्यक्त किए हैं-

"जाति, धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम-सम्मान यहाँ ।
राम रहीम, बुद्ध, ईसा का सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव-संस्कृतियों को गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ ।।" 6

इस दृष्टि से उनकी 'गुरुकुल', 'काबा और कर्बला', 'हिंदू' तथा 'वन-वैभव' काव्य रचनाएँ अनुशीलन योग्य हैं। 'गुरुकुल' में गुप्तजी ने सिक्खों के बलिदान पूर्ण आख्यानों द्वारा भारत राष्ट्र को सैनिकी शक्ति, राज्य शक्ति अथवा शारीरिक शक्ति की अपेक्षा आत्मिक संप्रदाय है एक उन्हीं का तत्व खालसा वीर विशिष्ट मुस्लिम इतिहास से संबंधित 'काबा और कर्बला' की रचना भी सर्वधर्म समन्वय को लक्ष्य करके लिखी गयी है। इसमें हिंदू-मुस्लिम एकता की भावना को सुदृढ़ बनाने का सुंदर प्रयास किया है। वे हजरत साहब से कहलवाते हैं-

"भारत का सद्भाव सुन चुका हूँ मैं पहले,
वह है ऐसी भूमि विभिन्न मतों को सहले।
चाहा था इसलिए वहीं जाकर रह जाऊँ,
किंतु विरोधी नहीं चाहते मैं जी पाऊँ ।" 7

'हिंदू' काव्य में गुप्तजी ने सांप्रदायिक एकता पर विशेष बल दिया है। 'वन-वैभव' काव्य में भी गुप्तजी ने भारत में व्याप्त हिंदू-मुस्लिम एकता की समस्या का पौराणिक आधार पर संमाधान प्रस्तुत किया है।

भारतीय राष्ट्रीय भावना का एक महत्वपूर्ण आयाम वसुधैव कुटुम्बकम और विश्वबंधुत्व की भावना है। संकुचित राष्ट्रीय भावना राष्ट्रों को स्वार्थी और दंभी बनाती है। उससे ग्रस्त होकर संसार के राष्ट्र अन्य राष्ट्रों का अहित ही करते हैं। गत दो विश्वयुद्ध इस संकुचित राष्ट्रीय भावना के ही कुपरिणाम कहे जा सकते हैं। सर्वधर्म समन्वय पर बल देनेवाले गुप्तजी केवल एक ही धर्म में विश्वास करते हैं और वह है मानवधर्म इसी मानवधर्म ने उन्हें विश्वबंधुत्व की भावना की ओर आकृष्ट किया है।

Scanned with CamScanner

E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

'भारत-भारती' काव्य में भी वे इसी तत्व पर बल देते हैं। 'सर्वभूतहित रत निजधर्म' माननेवाले गुप्तजी का सिद्धांत 'बहुधर्मी फिर एक कुटुंब' वाला है। वे व्यक्ति को स्वतंत्र मानते हैं, लेकिन 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को लिए हुए हैं। उनके मत में भिन्न धर्म के होते हुए भी लोग आपस में बंधु बन सकते हैं-

"होकर भी विभिन्न मतनिष्ठ हो सकते है बंधु वरिष्ठ,
मिले लौटकर यदि सविवेक तो हैं तीन और छः एक।।" 8

विश्वबंधुत्व की भावना से सजग मैथिलीशरण गुप्त युद्धों का घोर विरोध करते हैं। अहिंसा के भाव से प्रेरित कवि 'विश्ववेदना' की रचना करके युद्ध की विभीषिका से राष्ट्र को अवगत कराते हैं। 'विश्ववेदना' में विश्व महायुद्धजन्य भीतियों से पीड़ित कवि का मन एकता के लिए व्यथित हो उठता है।

गुप्तजी ऐसे एक ऐश्वर्यपूर्ण रामराज्य की इच्छा करते हैं जहाँ भावात्मक एकता स्थापित हो और भूतल ही स्वर्ग बन जाए। इस प्रकार भारतीय संस्कृति की यह विराट सामाजिकता ही गुप्तजी को इष्ट थी और इसी उदात्त भावना को वे राष्ट्र भावना के रूप में स्वीकार करते हैं। आज देश में जिस राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सांप्रदायिक सद्भाव की बात की जा रही है गुप्तजी के काव्य में यह सर्वोपरि है। कवि ने सार्वभौम राज्यादर्श का भी वर्णन किया है और विश्व को हिंसा से विमुख करके प्रेम और शांति के राज्य में विचरण करने का संदेश दिया है-

" जननी तेरे जात सभी हम, जननी तेरी जय है,
विश्व राज्य के प्रजातंत्र में किसको किसका भय है।
है व्यक्तित्व स्वतंत्र हमारे, पर समष्टिमय मंत्र हमारे,
हुए हृदययुत यंत्र हमारे, साधित सर्वोदय है।। 9

इस प्रकार समस्त वसुधा को कुटुंब और समस्त मानव जाति को भ्रातृत्व के भाव में बांधने वाले कवि गुप्तजी का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है। राष्ट्रीयता का एक अन्य आयाम भाषायी एकता भी है। यद्यपि गुप्तजी से पूर्व भारतेंदु हरिश्चंद्र देशवासियों को भाषा उद्धार के लिए सजग कर चुके थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से गुप्तजी ने सन १९०५ ई. से खड़ी बोली में काव्य रचना आरंभ कर दी थी। वे खड़ी बोली को राष्ट्रभाषा के रूप में उभारने के लिए एक उदार और व्यापक शब्द संपदा का निर्माण करना चाहते थे। खड़ी बोली को राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित करना गुप्तजी का सर्वाधिक दूरदर्शिता से युक्त कदम था, क्योंकि राष्ट्रीय आंदोलन को वाणी देने के लिए खड़ी बोली ही एक सशक्त माध्यम थी। इसीलिए गुप्तजी ने खड़ी बोली के विकास को सर्वोपरि महत्व दिया। उनका भाषा विषयक दृष्टिकोण अत्यंत उदार था। उनकी मान्यता थी- 'जब हम अरबी, फारसी और अंग्रेजी के शब्द निस्संकोच भाव से स्वीकार करते हैं तब आवश्यक होने पर अपनी प्रांतीय भाषाओं से उपयुक्त शब्द ग्रहण करने में हमें क्यों संकोच होना चाहिए।"10

इस प्रकार भाषा की मौलिकता और स्वरूप के विषय में गुप्तजी के विचार राष्ट्रीय अखंडता को साकार रूप देनेवाले हैं।

निष्कर्ष:-

इस तरह उपर्युक्त विवेचन के अधर पर कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता आन्दोलन और राष्ट्रीय काव्यधारा में हिंदी के अन्य सभी कवियों की अपेक्षा मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में सर्वाधिक राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय जागरण की भावना विद्यमान है। कवि गुप्तजी ने अंग्रेज सर्कार की बर्बरता को तोड़ने के लिए काव्य

Scanned with CamScanner

E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

का मार्मिक उपयोग किया है। उनके काव्य में इतनी शक्ति है कि वह भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से आजाद कर सके। जन मानस में आजादी की चेतना भरने की क्षमता उनकी कविता में यत्रतत्र विद्यमान है। डॉ. उमाकांत गोयल ने 'हिंदी साहित्य कोश' में ठीक ही लिखा है- "भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता के साथ ही मैथिलीशरण जी राष्ट्रीय कवि भी हैं। इनकी प्रायः सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओत प्रोत हैं।"11 तात्पर्य यह है कि मैथिलीशरण गुप्त का काव्य स्वाधीनता आन्दोलन में शास्त्र और शस्त्र की तरह उपयुक्त सिद्ध हुआ है । आधुनिक काल में राष्ट्रीय भावना को अग्रसर करने का महत्तर कार्य कवि गुप्तजी ने ही किया है।

संदर्भ:

1. सम्मलेन पत्रिका- सन 1909, पृ. 25
2. भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृ.11
3. हिंदू, मैथिलीशरण गुप्त, पृ.88
4. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, पृ.355
5. वाही, पृ. 234
6. गुरुकुल,मैथिलीशरण गुप्त, पृ. 130
7. काबा और कर्बला, मैथिलीशरण गुप्त , पृ. 66
8. भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृ. 66
9. विश्ववेदना, मैथिलीशरण गुप्त , पृ. 37
10. गुरुकुल, मैथिलीशरण गुप्त ,पृ.12
11. हिंदी साहित्य कोष, भाग -2, सम्पा.धीरेंद्र वर्मा

Scanned with CamScanner